22

पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत का निर्धारण

एक फर्म और उद्योगों के उद्देश्यों में से लाभ को अधिकतम करना, एक उद्देश्य है, वैकल्पिक रूप में फर्म अपनी हानि को न्यूनतम रखना चाहती है। अत: फर्म को वह कीमत और मात्रा निर्धारित करनी चाहिए, जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित कर सकें। एक फर्म कीमत और उत्पादन को किस प्रकार निर्धारित करती है, यह बाजार के प्रारूप, जिसमें वह कार्य कर रही है, पर निर्भर करता है। पूर्व अध्याय में आप यह पढ़ चुके हैं कि बाजार के जिसमें फर्में कार्य करती हैं, अनेक प्रकार हैं। इस पाठ में एक फर्म और उद्योग जिस प्रकार पूर्ण प्रतियोगी बाजार में कीमत और मात्रा को निर्धारित करते हैं, का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- संतुलन कीमत का अर्थ समझ पाएंगे;
- उस प्रक्रिया को समझा पाएंगे, जिसके द्वारा मांग और आपूर्ति दोनों की बाजार शक्तियां किसी वस्तु की संतुलन कीमत का निर्धारण करती हैं;
- मांग आधिक्य और आपूर्ति आधिक्य की अवधारणाओं को समझा पाएंगे;
- संतुलन कीमत और मात्रा पर मांग और/अथवा आपूर्ति में परिवर्तन को समझा पाएंगे; तथा
- एक प्रतियोगी फर्म की कीमत निर्धारण प्रक्रिया को समझ पाएंगे।

22.1 संतुलन कीमत का अर्थ

संतुलन का अभिप्राय उस अवस्था से है, जिससे परिवर्तन की प्रवृत्ति नहीं होती। प्रो. मार्शल ने मांग और आपूर्ति की तुलना कैंची के दो फलों से की। थोड़ा विचार करने पर पता चलता है कि एक फल अकेला कपड़े को नहीं काटता है, बल्कि दोनों फल एक साथ कपड़े को काटते हैं। इसी प्रकार, मांग अथवा आपूर्ति अकेले वस्तु की कीमत को निर्धारित नहीं करती है। दोनों एक साथ पारस्परिक क्रिया द्वारा किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण करती हैं।

मांग तथा आपूर्ति की शक्तियां, वस्तु की कीमत को निर्धारित करते हैं। उपभोक्ताओं और उत्पादकों के उद्देश्य में एक टकराव है। उत्पादक वस्तुओं को लाभ अधिकतम करने के लिए अधिकतम कीमत पर बेचना चाहते हैं और उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को अधिकतम करने के लिए वस्तुओं को कम-से-कम कीमत पर खरीदना चाहते हैं।

संतुलन मूल्य वहां निर्धारित होगा, जहां बाजार में मांगी जाने वाली मात्रा और आपूर्ति की गई मात्रा के बराबर है। इसे वस्तु की बाजार संतुलन कीमत कहते हैं।

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत उद्योग मांग तथा आपूर्ति

पाठ 21 में आप पढ़ चुके हैं कि पूर्ण प्रतियोगिता को एक समान उत्पाद उत्पन्न करने की बड़ी संख्या में फर्मों के समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है। ऐसी दशा में किसी भी फर्म को अपनी कीमत निर्धारित करने की शक्ति नहीं होती। उद्योग स्तर पर, वस्तु की कीमत, बाजार में वस्तु की मांग और आपूर्ति की शक्तियों की अंर्तक्रिया द्वारा निर्धारित होती है। क्योंकि उद्योग कीमत निर्धारक है, उद्योग का मांग वक्र, नीचे की ओर ढलवां होता है (पाठ 5 में दिए गए मांग वक्र जैसा), इसी भांति, उद्योग की आपूर्ति वक्र, ऊपर की ओर उठता हुआ होता है (पाठ 19 में दिए गए बाजार आपूर्ति जैसा)।

22.2 संतुलन कीमत पर पहुंचने की प्रक्रिया

नीचे दी गई सारणी 22.1 में वस्तु x की बाजार मांग तथा आपूर्ति को दिखाया गया है :

सारणी 22.2 : वस्तु x की कीमत का निर्धारण

कीमत(रु./कि.ग्रा.)	बाजार (कि.ग्रा.)	बाजार आपूर्ति (कि.ग्रा.)
6	16	24
5	18	22
4	20	20
3	22	18
2	24	16

मान लीजिए, प्रारंभिक कीमत रुपये 6 प्रति कि.ग्रा. है तथा मांग और आपूर्ति के स्तर क्रमश: 16 और 24 कि.ग्रा. हैं। स्पष्ट रूप से इस कीमत पर आपूर्ति की मात्रा, मांग की मात्रा से अधिक है। इसलिए, पूर्तिकर्ता अथवा उत्पादक (कम-से-कम उनमें से कुछ) यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी वस्तुएं अनबिकी न रह जाएं, क्रेताओं से कम कीमत लेने को तैयार हो जाते हैं। अत: कीमत धीरे-धीरे रुपये 6 से 5 प्रति कि.ग्रा. तक आ जाती है। इस अपेक्षाकृत कम कीमत पर मांग में 18 कि.ग्रा. तक विस्तार होता है तथा आपूर्ति में 22 कि.ग्रा. तक संकुचन (क्रमश: मांग और आपूर्ति के नियम के अनुसार) हो जाता है।

परंतु अब भी आपूर्ति और मांग के बीच अंतर है। इसलिए विक्रेता अब भी यह अनुभव करते हैं कि उनकी सभी वस्तुएं बाजार में नहीं बिक सकेंगी, क्योंकि मांग की मात्रा आपूर्ति की मात्रा से कम है। इसलिए वे (उनमें से कुछ) कीमत में और कमी करते हैं, ताकि ये सुनिश्चित

कर सकें कि उनकी वस्तुएं बाजार में अनबिकी न रहें। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक कि कीमत का एक ऐसा स्तर नहीं आ जाता, जहां मांग की मात्रा और आपूर्ति की मात्रा समान हो जाती हैं। इस प्रकार, जब कीमत रुपये 5 से कम होकर रुपये 4 हो जाती है तो मांग की मात्रा और आपूर्ति भी 20 कि.ग्रा. हो जाती है। अब आपूर्ति कर्ताओं के पास कीमत को ओर कम करने का कोई कारण नहीं है। अत: यदि आपूर्ति की मात्रा मांगी जाने की मात्रा से अधिक है तो वस्तु की कीमत तब तक गिरती रहती है, जब तक दोनों बराबर न हो जाएं।

ध्यान दीजिए, जब पूर्ति, मांग से अधिक होती है, तब इसे आपूर्ति आधिक्य कहते हैं, जिसके कारण मूल्य तक तक कम होते रहेंगे, जब तक मांग और आपूर्ति समान न हो जाएं।

दूसरी ओर, रु. 2 की अति नीची कीमत पर, मांग की मात्रा 24 कि.ग्रा. है, जो आपूर्ति की गई मात्रा अर्थात् 16 कि.ग्रा. से अधिक है। क्योंकि मांग, आपूर्ति से अधिक है, वस्तु का मूल्य बढ़कर रु. 3 हो जाती है। रु. 3 पर, मांग की मात्रा 22 कि.ग्रा.। अभी भी 18 कि.ग्रा. आपूर्ति से अधिक है। इससे कीमत बढ़कर रु. 4 हो जाएगी, जहां मांग और आपूर्ति 20 कि.ग्रा. पर समान हो जाती हैं।

ध्यान दीजिए, जब मांग, आपूर्ति से अधिक होती है तो इसे मांग-आधिक्य कहते हैं, जिसके कारण मूल्य तब तक गिरेंगे, जब तक मांग, आपूर्ति के बराबर न हो जाए। दिए गए उदाहरण में रु. 4 पर, मांग और आपूर्ति बराबर है। अत: मूल्य में घट-बढ़ का कोई कारण नहीं है। इस प्रकार रु. 4 संतुलन मूल्य है। इस मूल्य पर 20 कि.ग्रा. संतुलन मात्रा है।

कीमत निर्धारण की इस प्रक्रिया को चित्र 22.1 की सहायता से भी समझाया गया है। चित्र में, DD मांग वक्र है तथा SS आपूर्ति वक्र है। मांग वक्र DD का ऋणात्मक ढाल वस्तु की कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में ऋणात्मक संबंध को प्रकट करता है। इसी प्रकार, आपूर्ति वक्र SS का धनात्मक ढाल वस्तु की कीमत और उसकी आपूर्ति की मात्रा में धनात्मक संबंध को प्रकट करता है। मांग वक्र SS तथा आपूर्ति वक्र SS एक-दूसरे को E बिंदु पर काटते हैं, जो संतुलन का बिंदु है, जिस पर संतुलन कीमत रुपये 4 प्रति कि.ग्रा. और संतुलन मांग और आपूर्ति की मात्रा 20 कि.ग्रा. है। संतुलन कीमत को उस कीमत के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, जिस पर मांग वक्र और आपूर्ति वक्र आपस में काटते हैं। (वैकल्पिक रूप से संतुलन कीमत वह कीमत होती है, जिस पर वस्तु की मांग की मात्रा आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है।

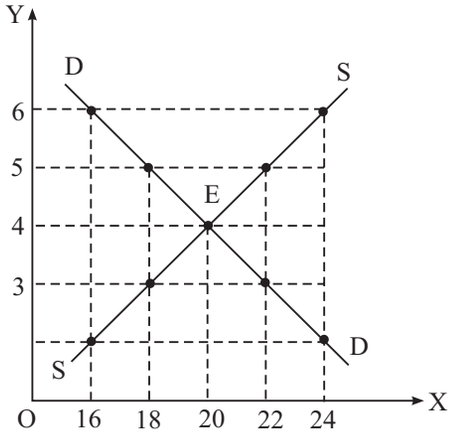

चित्र 22.1

पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म के लिए कीमत का निर्धारण

पूर्ण प्रतियोगिता में, मांग और आपूर्ति दोनों की बाजार शक्तियों की सहायता से, जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, उसी प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए उद्योग कीमत का निर्धारण करता है। फर्मों को उद्योग द्वारा कीमत को स्वीकार करना पड़ता है और इसी कीमत पर अपने उत्पादन को बेचने के लिए तैयार रहती हैं। इसे निम्नलिखित चित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है–

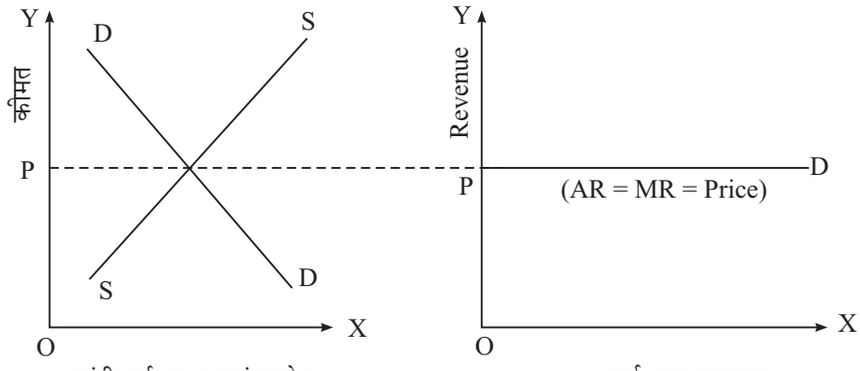

मांगी गई मात्रा एवं उद्योग द्वारा आपूर्ति

फर्म द्वारा उत्पादन

चित्र 22.2

उद्योग		फर्म					
कीमत (रु./कि.ग्रा.)	मांग की मात्रा (कि.ग्रा.)	पूर्ति की मात्रा (कि.ग्रा.)	कीमत (कि.ग्रा.)	पूर्ति की मात्रा	TR (P×Q)	AR AR = P	MR
2	20	12	4	0	0	4	–
3	18	14	4	1	4	4	4
4	16	16	4	2	8	4	4
5	14	18	4	3	12	4	4
6	12	20	4	4	16	4	4

पूर्ण प्रतियोगिता में रुपये 4 प्रति कि.ग्रा. कीमत पर उद्योग की मांग की मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा दोनों बराबर, 16 कि.ग्रा. हैं इसलिए उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत रुपये 4 प्रति कि.ग्रा. है, जिसे उद्योग की सभी फर्मों को स्वीकार करना पड़ता है। फर्म किसी भी मात्रा का विक्रय कर सकती है, परंतु कीमत रुपये 4 प्रति कि.ग्रा. पर स्थिर रहेगी। यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में AR = MR होती है और इन्हें एक आगम वक्र द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो x अक्ष के समांतर होता है।

पाठगत प्रश्न 22.1

1. संतुलन कीमत की परिभाषा दीजिए।
2. कीमत निर्धारण की कौन-सी शक्ति अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण होती है और क्यों?
3. क्या मांग वक्र DD तथा आपूर्ति वक्र SS के लिए संतुलन कीमत के दो स्तर हो सकते हैं? अपने उत्तर की पुष्टि के लिए तर्क दीजिए।
4. ठीक उत्तर के सामने चिन्हित कीजिए–

   (i) मांग वक्र और आपूर्ति वक्र के कटान का बिंदु प्रदर्शित करता है–

   (अ) संतुलन कीमत

   (ब) संतुलन मात्रा

   (स) उपर्युक्त में कोई नहीं

   (द) संतुलन कीमत और मात्रा दोनों

   (ii) किसी वस्तु की संतुलन कीमत वह कीमत होती है, जिस पर–

   (अ) मांग की मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा, दोनों बढ़ते हैं

   (ब) आपूर्ति अधिकतम होती है

   (स) मांग अधिकतम होती है

   (द) मांग और आपूर्ति की मात्रा बराबर होती है

   (iii) संतुलन से अभिप्राय है–

   (अ) चरों में लगातार परिवर्तन हो रहा है

   (ब) मांग और आपूर्ति असमान हैं

   (स) चरों में परिवर्तन की प्रवृत्ति नहीं है

   (द) उपर्युक्त में कोई नहीं।

   (iv) यदि किसी विशेष कीमत पर मांग की मात्रा आपूर्ति की मात्रा से अधिक है तो–

   (अ) कीमत बढ़ेगी

   (ब) मांग में कमी होगी

   (स) आपूर्ति में वृद्धि होगी

   (द) उपर्युक्त सभी

आइए, अब हम आधिक्य मांग और आधिक्य आपूर्ति को चित्रों के द्वारा समझते हैं।

22.3 मांग आधिक्य

मांग आधिक्य, मांग और आपूर्ति के बीच अंतर होता है, जब मांग आपूर्ति से अधिक हो। यदि किसी दी गई कीमत पर किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक है तो वह मांग आधिक्य कहलाएगा। उदाहरण के लिए, सारणी 22.1 में जब कीमत रुपये 2 प्रति कि.ग्रा. है। मांग की मात्रा 24 कि.ग्रा. है, जबकि आपूर्ति की मात्रा केवल 16 कि.ग्रा. है। स्पष्ट रूप से यह स्थिति मांग आधिक्य की स्थिति है।

समायोजन की प्रक्रिया

कीमत तंत्र की एक बहुत रुचिकर तथा महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि कोई भी असंतुलन स्वयं ठीक होने वाला होता है। इस प्रकार, यदि किसी कीमत पर मांग आधिक्य है तो कीमत में इस प्रकार से परिवर्तन होगा कि वह मांग और आपूर्ति में संतुलन लाएगी। चित्र 22.3 में, जब कीमत रुपये 2 है, मांग की मात्रा 24 कि.ग्रा. है, परंतु आपूर्ति की मात्रा केवल 16 कि.ग्रा. है। अत: यहां 24–16 = 8 कि.ग्रा. की आधिक्य मांग है। इस स्थिति में क्रेता यह अनुभव करते हैं कि उनमें से कुछ को बिना वस्तु के ही रहना पड़ेगा, क्योंकि आपूर्ति मांग से कम है। इसलिए वे वस्तु के लिए प्रतियोगिता करते हैं और इस प्रक्रिया में वे ऊंची कीमत देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसलिए कीमत रुपये 2 से बढ़कर रुपये 3 प्रति कि.ग्रा. हो जाती है। इस अपेक्षाकृत ऊंची कीमत पर मांग 24 कि.ग्रा. से 22 कि.ग्रा. तक संकुचित हो जाती है और आपूर्ति में 16 कि.ग्रा. से 18 कि.ग्रा. तक विस्तार हो जाता है। अत: आधिक्य मांग का परिमाण 8 कि.ग्रा. से 4 कि.ग्रा. तक कम हो गया है। परंतु मांग की मात्रा और आपूर्ति की मात्रा में अंतर अब भी है और क्रेताओं में से कुछ बिना वस्तु के रह जाएंगे। इसलिए अभी भी प्रतियोगिता होती है, जो कीमत को और बढ़ाकर रुपये 4 प्रति कि.ग्रा. कर देती है, जहां मांग और संकुचित होकर 20 कि.ग्रा. और आपूर्ति में विस्तार होकर 20 कि.ग्रा. हो जाती है। अब मांग की मात्रा और आपूर्ति की मात्रा दोनों बराबर हैं।

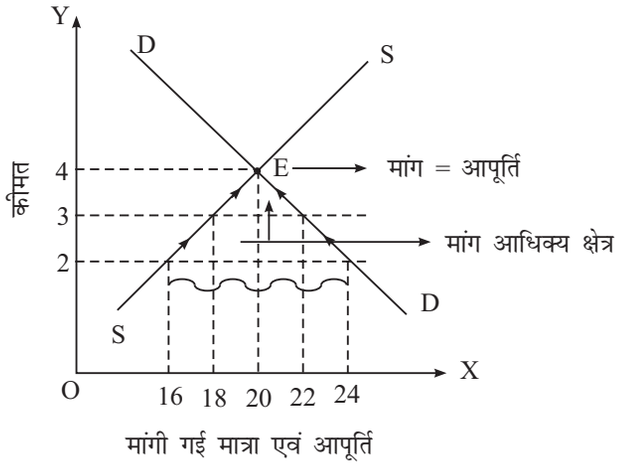

चित्र 22.3

अत: संतुलन कीमत में वृद्धि से प्राप्त हुआ है, जिससे मांग भी संकुचित हुई है और आपूर्ति में विस्तार हुआ है। हम इस प्रक्रिया का सार निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं–

(अ) मांग आधिक्य होने पर, कीमत बढ़ना आरंभ कर देती है, क्योंकि क्रेता एक-दूसरे से प्रतियोगिता करने का प्रयत्न करते हैं।

(ब) कीमत में वृद्धि के फलस्वरूप, मांग संकुचित होना आरंभ कर देती है और आपूर्ति में विस्तार आरंभ हो जाता है।

(स) कीमत, मांग और आपूर्ति के इन सभी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप ऊंची कीमत के द्वारा संतुलन को फिर से प्राप्त कर लिया जाता है।

22.4 आपूर्ति आधिक्य

पूर्ति आधिक्य मांग और आपूर्ति के बीच का अंतर होता है, जब आपूर्ति मांग से अधिक होती है। यदि किसी दी गई कीमत पर, किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है तो आपूर्ति आधिक्य होता है। उदाहरण के लिए, सारणी 22.1 में जब कीमत रु. 6 प्रति कि.ग्रा. है तो मांग की मात्रा 16 कि.ग्रा. है, जबकि आपूर्ति की मात्रा 24 कि.ग्रा. है। स्पष्ट रूप से यह आधिक्य आपूर्ति की स्थिति है।

समायोजन की प्रक्रिया

जब रुपये 6 प्रति कि.ग्रा. कीमत पर आपूर्ति की मात्रा मांग की मात्रा से अधिक है तो पूर्तिकर्ता अब चिंतित हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि आपूर्ति आधिक्य के कारण उनकी सभी वस्तुएं नहीं बिक सकेंगी। प्रत्येक पूर्तिकर्ता यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उसकी वस्तुएं बिना बिकी न रहें। इसको सुनिश्चित करने के लिए, पूर्तिकर्ता कीमत को रुपये 5 प्रति कि.ग्रा. तक कम करके उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयत्न करता है। परंतु अन्य पूर्तिकर्ता भी ठीक इसी प्रकार से कर रहे हैं। अत: कीमत प्रभावशाली रूप से कम होकर रुपये 5 प्रति कि.ग्रा. हो जाती है। परंतु इस अपेक्षाकृत कम कीमत पर भी आपूर्ति अब भी मांग से 4 कि.ग्रा. अधिक है, इसलिए कीमत कम दूसरा चक्र आरंभ होता है। यह तब तक चलता रहता है, जब तक कि कीमत रुपये 4 प्रति कि.ग्रा. के स्तर तक पहुंच जाती है, जहां मांग की मात्रा आपूर्ति की मात्रा के बराबर हो जाती है। इस कीमत पर, आपूर्ति कर्ताओं के पास कीमत कम करने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि वे जानते हैं कि इस कीमत पर उनका सारा माल बिक जाएगा। अत: इस स्थिति में संतुलन कीमत को कम करके प्राप्त किया गया है, जिससे आपूर्ति संकुचित हुई है और मांग में विस्तार हुआ है।

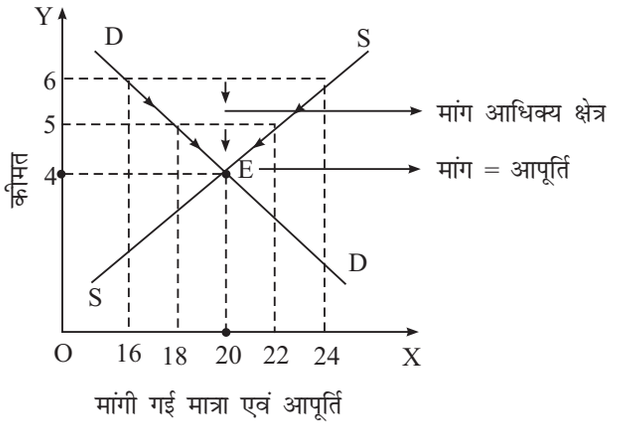

चित्र 22.4

हम इस प्रक्रिया का सार निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं–

(अ) आपूर्ति आधिक्य की अवस्था में, कीमत कम होना आरंभ करती है, क्योंकि पूर्तिकर्ता एक-दूसरे से प्रतियोगिता करने का प्रयास करते हैं।

(ब) कीमत में कमी के फलस्वरूप, मांग में विस्तार आरंभ हो जाता है तथा आपूर्ति संकुचित होना आरंभ कर देती हैं।

(स) कीमत, मांग और आपूर्ति के इन सभी परिवर्तनों के परिणामस्वरूप कम कीमत के द्वारा संतुलन को फिर से प्राप्त कर लिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 22.2

1. मांग आधिक्य क्या है?
2. आपूर्ति आधिक्य क्या है?
3. मांग आधिक्य की स्थिति में मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन को पुनः कैसे प्राप्त किया जाता है?
4. आपूर्ति आधिक्य की स्थिति में मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन को पुनः कैसे प्राप्त किया जाता है?
5. मांग आधिक्य की स्थिति में कीमत, मांग और आपूर्ति पर, समायोजन की प्रक्रिया के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।
6. आपूर्ति आधिक्य की स्थिति में कीमत, मांग और आपूर्ति पर, समायोजन की प्रक्रिया के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

22.5 मांग में परिवर्तन का संतुलन कीमत तथा मात्रा पर प्रभाव

क्योंकि किसी वस्तु की कीमत निर्धारण करने में मांग और आपूर्ति दो शक्तियां होती हैं, इनमें से एक अथवा दोनों में परिवर्तन कीमत में अवश्य ही परिवर्तन लाता है। इस भाग में हम आपूर्ति को स्थिर मानकर मांग में परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

(i) मांग में वृद्धि का प्रभाव

जब किसी बाह्य कारक, जैसे–जनसंख्या में वृद्धि, लोगों की आय में वृद्धि के कारण वस्तु की मांग में वृद्धि होती है (प्रत्येक कीमत स्तर के लिए) तो मांग वक्र दाहिनी तरफ खिसक जाता है। परिणामस्वरूप, यह अब पूर्तिवक्र को एक नए, उच्च स्तर पर काटता है, जिसके कारण कीमत में वृद्धि होती है। जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है, आरंभिक मांग वक्र DD पूर्तिवक्र SS को बिंदु e पर काटता है।

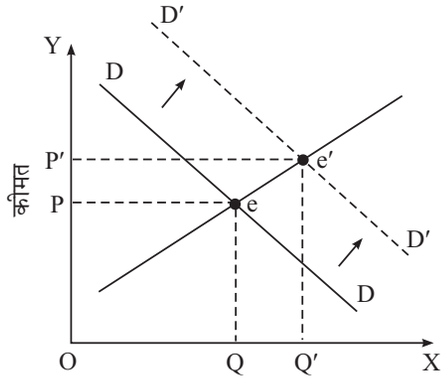

मांगी गई मात्रा एवं आपूर्ति

चित्र 22.5

संतुलन कीमत OP है तथा मांग तथा आपूर्ति की संतुलन मात्रा OQ हैं। अब मान लीजिए मांग में वृद्धि हो जाती है और परिणामस्वरूप मांग वक्र दाहिनी ओर खिसक जाता है। यह नया मांग वक्र D_1D_1 आपूर्ति वक्र SS को e बिंदु पर काटता है। अत: नई संतुलन कीमत OP है, जो पहली कीमत OP से अधिक है। यह भी ध्यान दें कि मांग और आपूर्ति की मात्राएं भी OQ से बढ़कर OQ हो गई हैं।

(ii) मांग में कमी का प्रभाव

जब किसी बाह्य घटना, जैसे–आय के स्तर में कमी के कारण वस्तु की मांग में कमी हो जाती है तो मांग वक्र बायीं तरफ खिसक जाता है। अत: यह नया मांग वक्र आपूर्ति वक्र को निचले स्तर पर काटता है, जिसके कारण कीमत कम हो जाती है। जैसा कि चित्र 22.6 में दिखाया गया है, आरंभिक मांग वक्र DD पूर्तिवक्र SS को बिंदु e पर काटता है।

संतुलन कीमत OP है तथा मांग तथा आपूर्ति की संतुलन मात्रा OQ हैं। अब मान लीजिए मांग में कमी हो जाती है और परिणामस्वरूप मांग वक्र बायीं ओर खिसक जाता है। यह नया मांग वक्र D^1D^1 आपूर्ति वक्र SS को e बिंदु पर काटता है। अत: नई संतुलन कीमत OP है, जो पहली कीमत OP से कम है। यह भी ध्यान दें कि मांग और आपूर्ति की मात्राएं भी OQ से बढ़कर OQ^1 हो गई हैं।

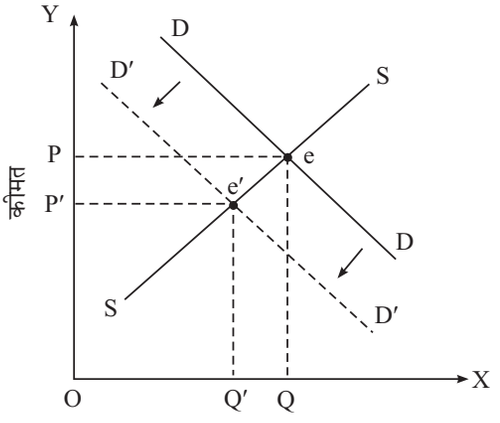

मांगी गई मात्रा एवं आपूर्ति

चित्र 22.6

22.6 आपूर्ति में परिवर्तन का संतुलन कीमत तथा मात्रा पर प्रभाव

इस स्थिति, हममें मांग अपरिवर्तित रहने पर वस्तु की आपूर्ति में परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

(i) आपूर्ति में परिवर्तन का प्रभाव

जब किसी अच्छी बाह्य कारक, जैसे अच्छी फसल, के कारण किसी वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है (प्रत्येक कीमत स्तर पर), आपूर्ति वक्र दाहिनी ओर खिसक जाता है। परिणामस्वरूप, यह अब मांग वक्र को नए, निचले स्तर पर काटता है, जिसके कारण कीमत कम हो जाती है। जैसा कि चित्र 22.9 में दिखाया गया है। मांग वक्र DD आरंभिक पूर्तिवक्र SS को e बिंदु पर काटता है।

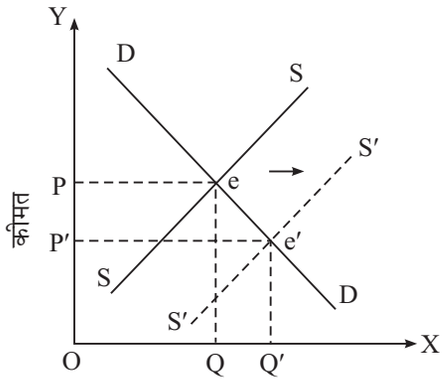

मांगी गई मात्रा एवं आपूर्ति

चित्र 22.7

(ii) आपूर्ति में कमी का प्रभाव

जब किसी बाह्य घटना, जैसे कच्चे माल की कमी अथवा बाढ़ या सूखा के कारण किसी वस्तु की आपूर्ति कम हो जाती है तो आपूर्ति वक्र बायीं ओर खिसक जाता है। इसलिए यह नया पूर्तिवक्र मांग वक्र को ऊंचे स्तर पर काटता है, जिसके कारण कीमत बढ़ जाती है। जैसा कि चित्र 22.10 में दिखाया गया है। मांग वक्र DD आरंभिक पूर्तिवक्र SS को e बिंदु पर काटता है।

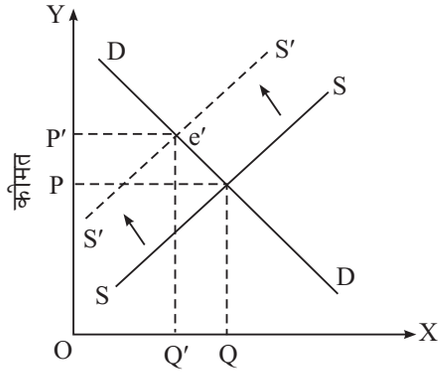

मांगी गई मात्रा एवं आपूर्ति

चित्र 22.8

संतुलन कीमत OP है तथा मांग और आपूर्ति की संतुलन मात्रा OQ है। अब मान लीजिए, आपूर्ति कम हो जाती है तथा परिणामस्वरूप आपूर्ति वक्र बायीं ओर खिसक जाता है। यह नया आपूर्ति वक्र (i) मांग वक्र DD को बिंदु पर काटता है। अत: नई संतुलन कीमत OP है, जो पहले की कीमत OP से अधिक है। यह भी ध्यान दें कि मांग और आपूर्ति की संतुलन मात्रा भी OQ से घटकर OQ_1 हो गई है।

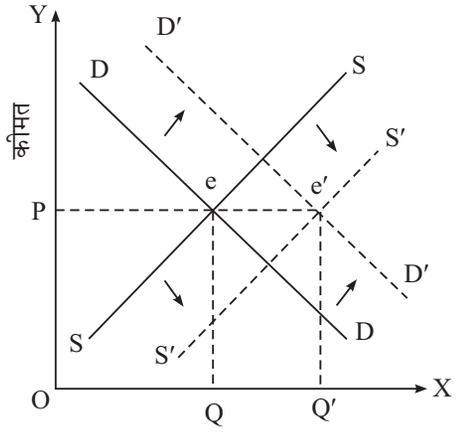

मांगी गई मात्रा एवं आपूर्ति

चित्र 22.9

22.7 मांग और आपूर्ति में एक साथ परिवर्तन का संतुलन कीमत तथा मात्रा पर प्रभाव

मांग और आपूर्ति में परिवर्तन के फलस्वरूप संतुलन कीमत में परिवर्तन होता है। कीमत में परिवर्तन की दिशा मांग और आपूर्ति में परिवर्तन की सापेक्ष शक्ति पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, यदि मांग और आपूर्ति दोनों में वृद्धि होती है और आपूर्ति में परिवर्तन की अपेक्षा मांग में परिवर्तन अधिक है तो कीमत में वृद्धि होगी। मांग और आपूर्ति में कोई परिवर्तन और उनका कीमत पर प्रभाव को उपयुक्त मांग और आपूर्ति वक्र खींचकर दिखाया जा सकता है। कुछ स्थितियां यहां दी गई हैं–

मांग और आपूर्ति दोनों में वृद्धि

जब मांग और आपूर्ति दोनों में वृद्धि होती हैं तो तीन संभव स्थितियों को निम्न प्रकार से समझाया जा सकता है–

(अ) मांग में वृद्धि = मांग में पूर्ति

मांग में वृद्धि का कीमत पर ऊपर की ओर प्रभाव, आपूर्ति में वृद्धि के नीचे की ओर प्रभाव के बराबर होता है, क्योंकि दोनों शक्तियां परिमाण में बराबर होती हैं, कीमत स्तर समान रहता है। इसे चित्र 22.11 में दिखाया गया है।

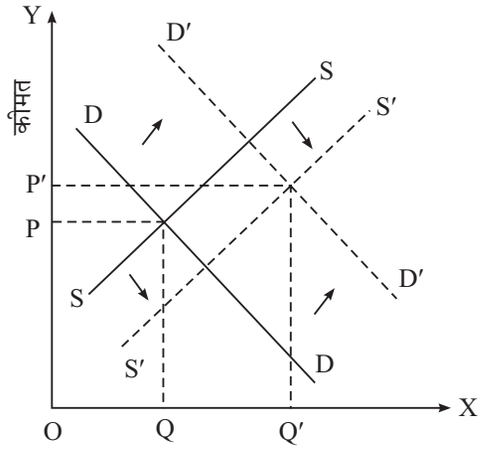

चित्र 22.10

(ब) मांग में वृद्धि > आपूर्ति में वृद्धि

क्योंकि इस स्थिति में मांग में वृद्धि का कीमत पर ऊपर की ओर प्रभाव, आपूर्ति में वृद्धि से नीचे की ओर प्रभाव से अधिक होता है। परिणामस्वरूप, कीमत स्तर में वृद्धि होती है। इसे चित्र 22.12 में दिखाया गया है।

चित्र 22.12

(स) मांग में वृद्धि > आपूर्ति में वृद्धि

इस स्थिति में, मांग में वृद्धि का कीमत पर ऊपर की ओर प्रभाव, आपूर्ति में वृद्धि के नीचे की ओर प्रभाव से कम होता है। परिणामस्वरूप, कीमत स्तर में कमी होती है। इसे चित्र 22.13 में दिखाया गया है।

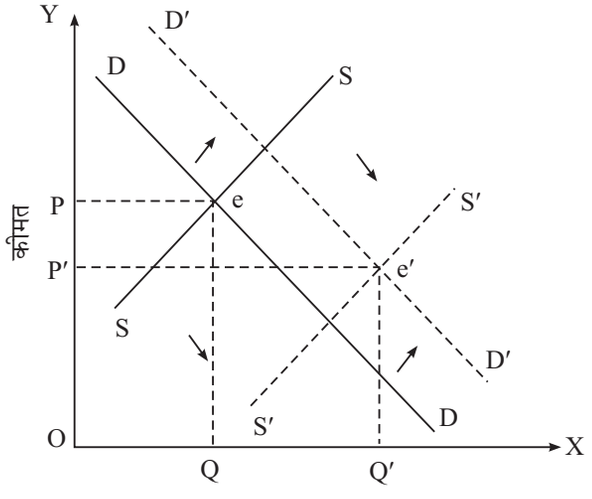

चित्र 22.11

कुछ अन्य स्थितियां

इसी प्रकार, मांग और आपूर्ति में परिवर्तन की अन्य बहुत-सी स्थितियों पर विचार कर सकते हैं। ऊपर वर्णन किए गए अनुसार, तीन संभावनाओं सहित दोनों में (मांग और आपूर्ति में) एक साथ कमी अथवा उनमें से एक में कमी तथा दूसरे में वृद्धि फिर कमी अथवा वृद्धि के परिणाम, मांग और आपूर्ति की विभिन्न लोचों का कीमत तथा मात्राओं पर प्रभाव का अध्ययन कर सकते हैं। संभावनाएं अनेक हो सकती हैं, परंतु संतुलन कीमत पर पहुंचने की विधि वही रहती है।

पाठगत प्रश्न 22.3

1. चित्रों की सहायता से मांग में वृद्धि और कमी के कीमत पर प्रभाव को दिखाइए, जब आपूर्ति स्थिर रहती है।

2. चित्रों की सहायता से आपूर्ति में वृद्धि और कमी के कीमत पर प्रभाव को दिखाइए, जब मांग स्थिर रहती है।

3. किसी वस्तु की कीमत पर आपूर्ति में वृद्धि के प्रभाव को दिखाइए, जब उसकी मांग पूर्णतः बेलोच है।

4. मांग और आपूर्ति में एक साथ कमी के कीमत पर प्रभाव को दिखाइए, जब आपूर्ति में अपेक्षाकृत अधिक परिवर्तन होता है।

22.8 मांग और आपूर्ति के विश्लेषण का सरल व्यावहारिक उपयोग

संतुलन कीमत के निर्धारण के दैनिक जीवन में अनेक उपयोग पाए जाते हैं तथा सरकार द्वारा नीतियों के निर्धारण से संबंधित होते हैं। उदाहरण के लिए, संतुलन कीमत की सहायता से न्यूनतम कीमत तथा उच्चतम कीमत से संबंधित नीतियों को समझाया जा सकता है।

(अ) उच्चतम कीमत (Ceiling Price) : जब बाजार में प्रचलित कीमत बहुत ऊंची होती है और उपभोक्ताओं के हितों को बुरी तरह प्रभावित कर रही है तो सरकार को इसमें हस्तक्षेप करना पड़ता है और उच्चतम कीमत निश्चित करती है। विक्रेताओं को अपने उत्पाद की कीमत इस उच्चतम कीमत से ऊपर बढ़ाने की अनुमति नहीं दी जाती है और इस प्रकार उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा की जाती है। इसका एक उदाहरण लगान नियंत्रण नीति है। मान लीजिए, एक विशेष प्रकार के फ्लैटों का वर्तमान किराया OP पर निर्धारित किया गया है, जो अत्यधिक है। ऐसी स्थिति में, सरकार मनमाने ढंग से OP_C पर निश्चित कर सकती है, जो OP से कम है और जो किरायेदारों (उपभोक्ताओं) को कुछ सहायता प्रदान करेगा।

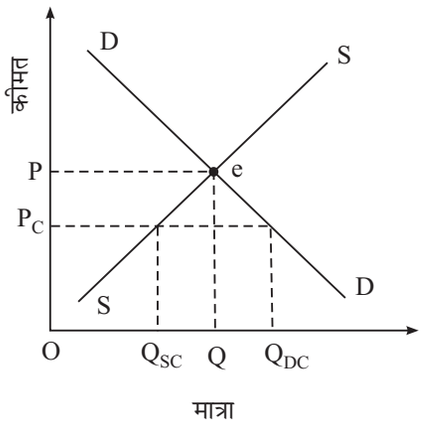

चित्र 22.12

यह उल्लेखनीय हे कि इस नियंत्रित OP_C पर फ्लैटों की मांग (OQ_{DC}) उनकी आपूर्ति (OQ_{SC}) से अधिक है और इससे संदेहात्मक आचरण को जन्म मिलता है, जिसके लिए सरकार को रोकने और सुधारने के उपाय करने पड़ते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि OP स्तर से ऊंची कीमत निश्चित करना ठीक नहीं है, क्योंकि कीमत तंत्र अपने आप कीमत स्तर को वापस OP पर ला देगा।

(ब) न्यूनतम कीमत (Floor Price) : यह आवश्यक नहीं है कि निर्धारित कीमत सदैव ही बहुत ऊंची हो। कभी-कभी यह बहुत कम भी हो सकती है। ऐसा, विशेष रूप से किसी वस्तु की अत्यधिक आपूर्ति वाले बाजारों में हो सकता है। उदाहरण के लिए, भारतीय श्रम बाजार श्रम की अत्यधिक आपूर्ति वाला बाजार है। ऐसी स्थिति में, मांग और आपूर्ति की शक्तियों के द्वारा निर्धारित मजदूरी की दर सामान्य रूप से बहुत कम होती है (विशेष रूप से अकुशल श्रम के बाजार में)। ऐसी स्थिति में श्रमिकों के हितों की रक्षा करने के लिए सरकार न्यूनतम मजदूरी अधिनियम लागू कर सकती है। मान लीजिए, बाजार में प्रचलित मजदूरी की दर OW है, जो बहुत कम है। सरकार न्यूनतम मजदूरी अधिनियम लागू करती है और न्यूनतम मजदूरी OW_F पर निश्चित कर देती है। न्यूनतम मजदूरी न्यूनतम कीमत है। सरकार कीमत स्तर को न्यूनतम कीमत से नीचे जाने की अनुमति नहीं देती है तथा विक्रेताओं के हितों की रक्षा हो जाती है (श्रमिक अपने श्रम का विक्रेता है)।

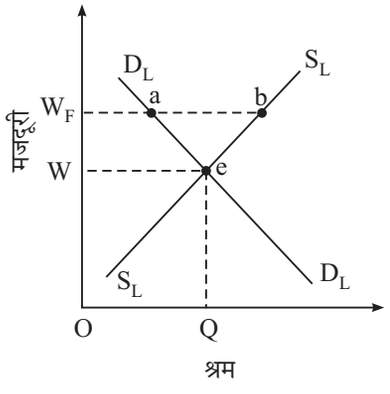

चित्र 22.13

पाठगत प्रश्न 22.4

1. उच्चतम कीमत क्या होती है?
2. न्यूनतम कीमत क्या होती है?
3. न्यनूतम मजदूरी अधिनियम की आवश्यकता क्यों होती है?
4. एक रेखाचित्र की सहायता से उच्चतम कीमत (Ceiling Price) को समझाइए।
5. संतुलन कीमत की परिभाषा दीजिए।

आपने क्या सीखा

- संतुलन कीमत वह कीमत होती है, जिस पर बाजार मांग बाजार आपूर्ति के बराबर होती है।
- संतुलन कीमत किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति की शक्तियों की पारस्परिक अंर्तक्रिया द्वारा निर्धारित होती है। मांग और आपूर्ति वक्रों के कटाव का बिंदु 'संतुलन बिंदु' कहलाता है और इस बिंदु पर निर्धारित कीमत तथा मात्रा 'संतुलन कीमत' तथा 'संतुलन मात्रा' कहलाती है।
- लोचता का गुण यह सुनिश्चित करता है कि मांग और आपूर्ति में कोई भी असंतुलन, कीमत परिवर्तनों द्वारा स्वयं ठीक करने वाला होता है।
- मांग आधिक्य से अभिप्राय है कि किसी दी गई कीमत पर आपूर्ति से मांग अधिक है।
- पूर्ति आधिक्य से अभिप्राय है कि किसी दी गई कीमत पर आपूर्ति मांग से अधिक है।
- किसी वस्तु की मांग में वृद्धि/कमी से दी गई आपूर्ति के लिए संतुलन कीमत तथा मात्रा दोनों में वृद्धि/कमी होगी।
- किसी वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि/कमी से, दी गई मांग के लिए, संतुलन कीमत तथा मात्रा दोनों में कमी/वृद्धि होगी।
- जब मांग और आपूर्ति दोनों में वृद्धि या कमी होती है तो उनका संतुलन कीमत और मात्रा पर प्रभाव मांग और आपूर्ति के सापेक्ष परिमाण पर निर्भर करता है।
- उच्चतम कीमत उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने के लिए संतुलन कीमत से नीचे निश्चित की गई कीमत होती है। सरकार कीमत को उच्चतम कीमत से ऊपर बढ़ने की अनुमति नहीं देती है।
- न्यूनतम कीमत विक्रेताओं के हितों की रक्षा करने के लिए संतुलन कीमत से ऊपर निश्चित की गई कीमत है। सरकार कीमत को न्यूनतम कीमत से नीचे गिरने की अनुमति नहीं देती है। न्यूनतम मजदूरी अधिनियम इसका एक उदाहरण है।

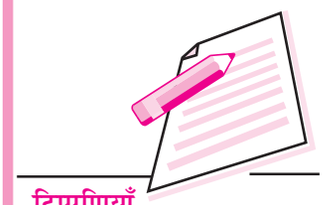

पाठांत प्रश्न

1. संतुलन कीमत क्या होती है?
2. मांग आधिक्य क्या होती है? मांग आधिक्य की स्थिति में फिर से मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन कैसे पुनः स्थापित किया जाता है?
3. आपूर्ति आधिक्य क्या है? आपूर्ति आधिक्य की स्थिति में फिर से मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन कैसे पुनः स्थापित किया जाता है?
4. संतुलन कीमत तथा मात्रा पर मांग और आपूर्ति में एक साथ वृद्धि के प्रभाव की व्याख्या कीजिए। उचित चित्रों का प्रयोग कीजिए।
5. एक वस्तु की मांग और आपूर्ति की अनुसूची नीचे दी गई है?

   (i) वस्तु की संतुलन कीमत कितनी है?

   (ii) इस कीमत पर मांग तथा आपूर्ति की मात्रा कितनी है?

   (iii) क्या होता है, यदि आरंभिक कीमत रु. 2 प्रति कि.ग्रा. है?

   (iv) क्या होता है, यदि आरंभिक कीमत रु. 6 प्रति कि.ग्रा. है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. देखें 22.1
2. देखें 22.1
3. देखें 22.2
4. (i) (द) (ii) (द) (iii) (स) (iv) (द)

22.2

1. देखें 22.3
2. देखें 22.4
3. देखें 22.3 (समायोजन की प्रक्रिया)
4. देखें 22.4 (समायोजन की प्रक्रिया)
5. देखें 22.3
6. देखें 22.4

22.3

1. देखें 22.5
2. देखें 22.6
3. 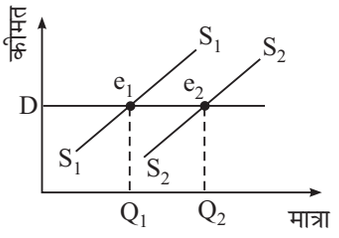

   अत: कीमत वही रहती है, जबकि मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

4. मांग वक्र के D_1D_1 से D_2D_2 खिसकाव और आपूर्ति S_1S_1 से S_2S_2 होने के कारण संतुलन बिंदु e_1 से e_2 हो गया है (ध्यान दें कि आपूर्ति वक्र के खिसकाव का परिणाम अधिक है)। परिणामस्वरूप, संतुलन कीमत P_1 से घटकर P_2 तथा संतुलन मात्रा Q_1 से घटकर Q_2 हो जाती है।

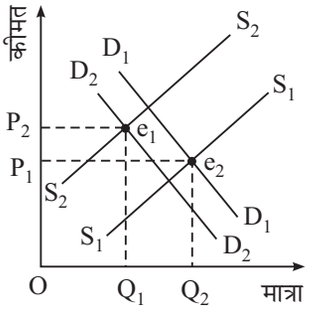

22.4

1. देखें 22.8 (अ)
2. देखें 22.8 (ब)
3. देखें 22.8 (ब)
4. देखें 22.8 (अ)